اٰیاتها ٢٥ | ٨٤ سُوْرَةُ الْاِنْشِقَاقِ مَكِّيَّةٌ ٨٣ | رکوعها ١

सूरए इन्शिक़ाक़ मक्किय्या है, इस में पच्चीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहूम वाला[1]

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ۙ﴿۱﴾ وَ اَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَ حُقَّتْ ۙ﴿۲﴾ وَ اِذَا الْاَرْضُ

जब आस्मान शक़ हो[2] और अपने रब का हुक्म सुने[3] और उसे सज़ावार ही येह है और जब ज़मीन

مُدَّتْ ۙ﴿۳﴾ وَ اَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَ تَخَلَّتْ ۙ﴿۴﴾ وَ اَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَ حُقَّتْ ۙ﴿۵﴾

दराज़ की जाए[4] और जो कुछ उस में है[5] डाल दे और ख़ाली हो जाए और अपने रब का हुक्म सुने[6] और उसे सज़ावार ही येह है[7]

يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ۚ﴿۶﴾ فَاَمَّا مَنْ

ऐ आदमी बेशक तुझे अपने रब की त़रफ़[8] यक़ीनी दौड़ना है फिर उस से मिलना[9] तो वोह जो

اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ﴿۷﴾ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا ۙ﴿۸﴾ وَّ يَنْقَلِبُ

अपना नामए आ'माल दहने हाथ में दिया जाए[10] उस से अ़न्क़रीब सहल हिसाब लिया जाएगा[11] और अपने घर वालों

اِلٰۤى اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ؕ﴿۹﴾ وَ اَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهْرِهٖ ۙ﴿۱۰﴾ فَسَوْفَ

की त़रफ़[12] शाद शाद पलटेगा[13] और वोह जिस का नामए आ'माल उस की पीठ के पीछे दिया जाए[14] वोह अ़न्क़रीब

يَدْعُوْا ثُبُوْرًا ۙ﴿۱۱﴾ وَّ يَصْلٰى سَعِيْرًا ؕ﴿۱۲﴾ اِنَّهٗ كَانَ فِيْۤ اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ؕ﴿۱۳﴾

मौत मांगेगा[15] और भड़क्ती आग में जाएगा बेशक वोह अपने घर में[16] ख़ुश था[17]

1 : "सूरए इन्शक़्क़त" जिस को "सूरए इन्शिक़ाक़" भी कहते हैं मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, पच्चीस आयतें, एक सो सात कलिमात, चार सो तीस ह़र्फ़ हैं। **2 :** क़ियामत क़ाइम होने के वक़्त **3 :** अपने शक़ होने के मुतअ़ल्लिक़ और उस की इत़ाअ़त करे। **4 :** और उस पर कोई इ़मारत और पहाड़ बाक़ी न रहे। **5 :** या'नी उस के बत़ून में ख़ज़ाने और मुर्दे सब को बाहर **6 :** अपने अन्दर की चीज़ें बाहर फेंक देने के मुतअ़ल्लिक़ और उस की इत़ाअ़त करे **7 :** उस वक़्त इन्सान अपने अ़मल के नताइज देखेगा। **8 :** या'नी उस के हुज़ूर ह़ाज़िरी के लिये, मुराद इस से मौत है। (मदारिक) **9 :** और अपने अ़मल की जज़ा पाना **10 :** और वोह मोमिन है **11 :** सहल हिसाब येह है कि उस पर उस के आ'माल पेश किये जाएं, वोह अपनी त़ाआ़त व मा'सियत को पहचाने, फिर त़ाअ़त पर सवाब दिया जाए और मा'सियत से तजावुज़ फ़रमाया जाए, येह सहल हिसाब है न इस में शिद्दते मुनाक़शा (हर हर काम का हिसाब), न येह कहा जाए कि ऐसा क्यूं किया न उ़ज़्र की त़लब हो न इस पर हुज्जत क़ाइम की जाए, क्यूं कि जिस से मुत़ालबा किया गया उसे कोई उ़ज़्र हाथ न आएगा और वोह कोई हुज्जत न पाएगा रुस्वा होगा (अल्लाह तआ़ला मुनाक़शए हिसाब से पनाह दे) **12 :** घर वालों से जन्नती घर वाले मुराद हैं ख़्वाह हूरों में से हों या इन्सानों में से। **13 :** अपनी इस काम्याबी पर। **14 :** और वोह काफ़िर है जिस का दाहना हाथ तो उस की गरदन के साथ मिला कर त़ौक़ में बांध दिया जाएगा और बायां हाथ पसे पुश्त कर दिया जाएगा, उस में उस का नामए आ'माल दिया जाएगा, इस ह़ाल को देख कर वोह जान लेगा कि वोह अहले नार में से है तो **15 :** और "या सुबूराह" कहेगा "सुबूर" के मा'ना हलाकत के हैं। **16 :** दुन्या के अन्दर **17 :** अपनी ख़्वाहिशों और शह्वतों में और मुतकब्बिर व मग़रूर।

www.dawateislami.net

معانقة

إِنَّهٗ ظَنَّ أَنْ لَّنْ يَّحُوْرَ ﴿١٤﴾ بَلٰىٓ ۚ إِنَّ رَبَّهٗ كَانَ بِهٖ بَصِيْرًا ﴿١٥﴾ فَلَآ

वोह समझा कि उसे फिरना नहीं[18] हां क्यूं नहीं[19] बेशक उस का रब उसे देख रहा है तो मुझे

أُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ﴿١٦﴾ وَالَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ﴿١٧﴾ وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ﴿١٨﴾

क़सम है शाम के उजाले की[20] और रात की और जो चीज़ें उस में जम्अ़ होती हैं[21] और चांद की जब पूरा हो[22]

لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ﴿١٩﴾ فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَإِذَا قُرِئَ

ज़रूर तुम मन्ज़िल ब मन्ज़िल चढ़ोगे[23] तो क्या हुवा ईमान नहीं लाते[24] और जब क़ुरआन

السجدة ۱۳

عَلَيْهِمُ الْقُرْاٰنُ لَا يَسْجُدُوْنَ ﴿٢١﴾ السجدة بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٢﴾

पढ़ा जाए सज्दा नहीं करते[25] बल्कि काफ़िर झुटला रहे हैं[26]

وَاللّٰهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوْعُوْنَ ﴿٢٣﴾ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيْمٍ ﴿٢٤﴾ إِلَّا الَّذِيْنَ

और **अल्लाह** ख़ूब जानता है जो अपने जी में रखते हैं[27] तो तुम उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की बिशारत दो[28] मगर जो ईमान

18 : अपने रब की त़रफ़ और वोह मरने के बा'द उठाया न जाएगा **19 :** ज़रूर अपने रब की त़रफ़ रुजूअ़ करेगा और मरने के बा'द उठाया जाएगा और ह़िसाब किया जाएगा। **20 :** जो सुर्ख़ी के बा'द नुमूदार होता है और जिस के ग़ाइब होने पर इमाम साह़िब के नज़्दीक वक़्ते इशा शुरूअ़ होता है, येही क़ौल है कसीर सह़ाबा का और बा'ज़ उ़लमा "शफ़क़" से सुर्ख़ी मुराद लेते हैं। **21 :** मिस्ल जानवरों के जो दिन में मुन्तशिर होते हैं और शब में अपने आशियानों और ठिकानों की त़रफ़ चले आते हैं और मिस्ल तारीकी के और सितारों और उन आ'माल के जो शब में किये जाते हैं मिस्ल तहज्जुद के **22 :** और उस का नूर कामिल हो जाए और येह अय्यामे बैज़ या'नी तेरहवीं चौदहवीं पन्दरहवीं तारीख़ों में होता है। **23 :** येह ख़ित़ाब या तो इन्सानों को है इस तक़्दीर पर मा'ना येह हैं कि तुम्हें ह़ाल के बा'द ह़ाल पेश आएगा। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि मौत के शदाइद व अहवाल फिर मरने के बा'द उठना फिर मौक़िफ़े ह़िसाब में पेश होना, और येह भी कहा गया है कि इन्सान के ह़ालात में तदरीज है, एक वक़्त दूध पीता बच्चा होता है, फिर दूध छूटता है फिर लड़क पन का ज़माना आता है, फिर जवान होता है, फिर जवानी ढलती है, फिर बूढ़ा होता है और एक क़ौल येह है कि येह ख़ित़ाब नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم को है कि आप शबे मे'राज एक आस्मान पर तशरीफ़ ले गए फिर दूसरे पर इसी त़रह़ दरजा ब दरजा मर्तबा ब मर्तबा मनाज़िले क़ुर्ब में वासिल हुए। बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما से मरवी है कि इस आयत में नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم का ह़ाल बयान फ़रमाया गया है, मा'ना येह हैं कि आप को मुश्रिकीन पर फ़त्हो ज़फ़र ह़ासिल होगी और अन्जाम बहुत बेहतर होगा, आप कुफ़्फ़ार की सरकशी और उन की तक्ज़ीब से ग़मगीन न हों। **24 :** या'नी अब ईमान लाने में क्या उ़ज़्र है बा वुजूद दलाइल ज़ाहिर होने के क्यूं ईमान नहीं लाते ? **25 :** मुराद इस से सज्दए तिलावत है। **शाने नुज़ूल :** जब सूरत "इक़्रअ" में "وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ" नाज़िल हुवा तो सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने येह आयत पढ़ कर सज्दा किया, मोमिनीन ने आप के साथ सज्दा किया और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने सज्दा न किया, उन के इस फ़े'ल की बुराई में येह आयत नाज़िल हुई कि कुफ़्फ़ार पर जब क़ुरआन पढ़ा जाता है तो वोह सज्दए तिलावत नहीं करते। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि सज्दए तिलावत वाजिब है सुनने वाले पर, और ह़दीस से साबित है कि पढ़ने वाले सुनने वाले दोनों पर सज्दा वाजिब हो जाता है। क़ुरआने करीम में सज्दे की चौदह आयतें हैं जिन को पढ़ने या सुनने से सज्दा वाजिब हो जाता है ख़्वाह सुनने वाले ने सुनने का इरादा किया हो या न किया हो। **मस्अला :** सज्दए तिलावत के लिये भी वोही शर्तें हैं जो नमाज़ के लिये मिस्ल त़हारत और क़िब्ला रू होने और सत्रे औ़रत वग़ैरा के। **मस्अला :** सज्दे के अव्वलो आख़िर अल्लाहु अक्बर कहना चाहिये। **मस्अला :** इमाम ने आयते सज्दा पढ़ी तो उस पर और मुक़्तदियों पर और जो शख़्स नमाज़ में न हो और सुन ले उस पर सज्दा वाजिब है। **मस्अला :** सज्दे की जितनी आयतें पढ़ी जाएंगी उतने ही सज्दे वाजिब होंगे अगर एक ही आयत एक मजलिस में बार बार पढ़ी गई तो एक ही सज्दा वाजिब हुवा। (تفسیر احمدی) والتفصيل فى كتب الفقه **26 :** क़ुरआन को और मरने के बा'द उठने को। **27 :** कुफ़्र और नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم की तक्ज़ीब **28 :** उन के कुफ़्रो इनाद पर।

www.dawateislami.net

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝٢٥ ع

लाए और अच्छे काम किये उन के लिये वोह सवाब है जो कभी ख़त्म न होगा

اٰياتها ٢٢ | ٨٥ سُوْرَةُ الْبُرُوْجِ مَكِّيَّةٌ ٢٧ | ركوعها ١

सूरए बुरूज मक्किय्या है, इस में बाईस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ۝١ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ۝٢ وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ ۝٣

क़सम आस्मान की जिस में बुर्ज हैं[2] और उस दिन की जिस का वा'दा है[3] और उस दिन की जो गवाह है[4] और उस दिन की जिस में ह़ाज़िर होते हैं[5]

قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ۝٤ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ۝٥ اِذْ هُمْ عَلَيْهَا

खाई वालों पर ला'नत हो[6] वोह उस भड़क्ती आग वाले जब वोह उस के कनारों पर

1 : "सूरए बुरूज" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, बाईस आयतें, एक सो नव कलिमे, चार सो पेंसठ ह़र्फ़ हैं। 2 : जिन की ता'दाद बारह है और इन में अ़जाइबे ह़िक्मते इलाही नुमूदार हैं, आफ़्ताब महताब और कवाकिब की सैर इन में मुअ़य्यन अन्दाज़े पर है जिस में इख़्तिलाफ़ नहीं होता। 3 : वोह रोज़े क़ियामत है। 4 : मुराद इस से रोज़े जुमुआ़ है जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है। 5 : आदमी और फ़िरिश्ते, मुराद इस से रोज़े अ़रफ़ा है। 6 : मरवी है कि पहले ज़माने में एक बादशाह था जब उस का जादूगर बूढ़ा हुवा तो उस ने बादशाह से कहा कि मेरे पास एक लड़का भेज जिसे मैं जादू सिखा दूं, बादशाह ने एक लड़का मुक़र्रर कर दिया, वोह जादू सीखने लगा। राह में एक राहिब रहता था उस के पास बैठने लगा और उस का कलाम उस के दिल नशीन होता गया, अब आते जाते उस ने राहिब की सोह़बत में बैठना मुक़र्रर कर लिया, एक रोज़ रास्ते में एक मुहीब जानवर मिला, लड़के ने एक पथ्थर हाथ में ले कर येह दुआ़ की, कि या रब अगर राहिब तुझे प्यारा हो तो मेरे पथ्थर से इस जानवर को हलाक कर दे, वोह जानवर उस के पथ्थर से मर गया, इस के बा'द लड़का मुस्तजाबुद्दा'वत हुवा और उस की दुआ़ से कोढ़ी और अन्धे अच्छे होने लगे। बादशाह का एक मुसाह़िब नाबीना हो गया था वोह आया लड़के ने दुआ़ की वोह अच्छा हो गया और अल्लाह तआ़ला पर ईमान ले आया और बादशाह के दरबार में पहुंचा। उस ने कहा : तुझे किस ने अच्छा किया? कहा : मेरे रब ने। बादशाह ने कहा : मेरे सिवा और भी कोई रब है! येह कह कर इस ने उस पर सख़्तियां शुरूअ़ कीं यहां तक कि उस ने लड़के का पता बताया, लड़के पर सख़्तियां कीं, उस ने राहिब का पता बताया, राहिब पर सख़्तियां कीं और उस से कहा अपना दीन तर्क कर। उस ने इन्कार किया तो उस के सर पर आरा रख कर चिरवा दिया, फिर मुसाह़िब को भी चिरवाया दिया, फिर लड़के को हुक्म दिया कि पहाड़ की चोटी से गिरा दिया जाए। सिपाही उस को पहाड़ की चोटी पर ले गए, उस ने दुआ़ की, पहाड़ में ज़ल्ज़ला आया, सब गिर कर हलाक हो गए, लड़का सह़ीह़ सलामत चला आया। बादशाह ने कहा : सिपाही क्या हुए? कहा : सब को ख़ुदा ने हलाक कर दिया। फिर बादशाह ने लड़के को समुन्दर में ग़र्क़ करने के लिये भेजा। लड़के ने दुआ़ की, कश्ती डूब गई, तमाम शाही आदमी डूब गए, लड़का सह़ीह़ो सलामत बादशाह के पास आ गया। बादशाह ने कहा : वोह आदमी क्या हुए? कहा : सब को अल्लाह तआ़ला ने हलाक कर दिया और तू मुझे क़त्ल कर ही नहीं सकता जब तक वोह काम न करे जो मैं बताऊं! कहा : वोह क्या? लड़के ने कहा एक मैदान में सब लोगों को जम्अ़ कर और मुझे खजूर के ढुन्ड (सूखे तने) पर सूली दे, फिर मेरे तरकश से एक तीर निकाल कर "بِسْمِ اللّٰهِ رَبِّ الْغُلَام" कह कर मार, ऐसा करेगा तो मुझे क़त्ल कर सकेगा। बादशाह ने ऐसा ही किया, तीर लड़के की कनपट्टी पर लगा, उस ने अपना हाथ उस पर रखा और वासिल बह़क़ हो गया। येह देख कर तमाम लोग ईमान ले आए, इस से बादशाह को और ज़ियादा सदमा हुवा और उस ने एक ख़न्दक़ खुदवाई और उस में आग जलवाई और हुक्म दिया : जो दीन से न फिरे उसे इस आग में डाल दो। लोग डाले गए यहां तक कि एक औ़रत आई, उस की गोद में बच्चा था, वोह ज़रा झिजकी, बच्चे ने कहा : ऐ मां! सब्र कर, न झिजक, तू सच्चे दीन पर है। वोह बच्चा और मां भी आग में डाल दिये गए। येह ह़दीस सह़ीह़ है, मुस्लिम ने इस की तख़्रीज की, इस से औलिया की करामतें साबित होती हैं, आयत में इस वाक़िए़ का ज़िक्र है।